Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2022 3(2), 1288–1290

DR. ANIL SULABH'S NARRATIVE VISION

डॉ. अनिल सुलभ की कथा-दृष्टि

Munna Kumar Ram [1], Kalyan Kumar Jha [2], Sakshee Shalini [3], Rakesh Ranjan [4], Sushant Kumar [5]

[1] Research Student, University Department of Hindi, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur, India
[2] Professor, University Department of Hindi, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur, India
[3] Assistant Professor, Department of Hindi, Dharma Samaj Sanskrit College, Muzaffarpur, India
[4] Assistant Professor, University Department of Hindi, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur, India
[5] Assistant Professor, University Department of Hindi, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v3.i2.2022.5490

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2022 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: Dr. Anil Sulabh is a well-known name in the field of Hindi Literature. While presiding over the Bihar Hindi Sahitya Sammelan, Dr. Sulabh has been constantly trying to bring the achievements of Bihari writers in front of the country. While keeping the literary heritage of Bihar on the platform of the country and the world, he is also engaged in writing. His stories reflect the multi-dimensional perspective of life. Many of his story collections have been published. Prominent among them are 'Priyavanda', 'Safina Ka Bhai', 'Ganga Khand', 'Pretatma', 'Jee Saheb', 'Bhondi', 'Vishwa Sundari' etc. In this research article, an attempt has been made to reveal the story-view of Dr. Anil Sulabh.

Hindi: डॉ. अनिल सुलभ हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में एक जाना पहचाना नाम है। बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए डॉ. सुलभ बिहार के साहित्यकारों की उपलब्धियों को देश के सामने निरंतर लाने का प्रयास करते रहे हैं। बिहार साहित्यिक विरासत को देश दुनिया के पटल पर रखते हुए वे रचनाकर्म में भी रत हैं। उनकी कहानियाँ जीवन के विविध आयामी दृष्टिकोण को विम्बित करती है। उनकी कहानी संग्रह 'प्रियवंदा' प्रकाशित है। जिसमें 'सफीना का भाई', 'गंगा खण्ड', 'प्रेतआत्मा', 'जी साहब', 'भोंदी', 'विश्व सुन्दरी' आदि प्रमुख कहानियाँ हैं। इस शोध-आलेख में डॉ. अनिल सुलभ की कथा-दृष्टि को उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है।

Keywords: Singhasan, Sorath Vrajabhar, Lokbhasha, Grihadah, Karinda सिंहासन, सोरठी वृजाभार, लोकभाषा, गृहदाह, कारिन्दे

1. प्रस्तावना

मनुष्य के जीवन का प्रत्येक क्षण जो बीत रहा है, कहानी है, इन परिवर्तनशील क्षणों की कहानियों को किसी विशेष परिभाषा में बाँधना अत्यंत कठिन है। फिर भी विभिन्न लेखकों व आलोचकों ने अपने-अपने ढंग से कहानी की परिभाषा और स्वरूप को प्रस्तुत किया है। किसी घटना, पात्र या समस्या का क्रमबद्ध वर्णन कथा या कहानी के नाम से जाना जाता है। कहानी को लोकभाषा में 'कथा' साहित्यिक शब्दों में कहानी, अंग्रेजी में 'स्टोरी' बंग्ला भाषा में 'गल्प' कहा जाता है।

2. मुख्य भाग

सामान्य अर्थों में ''एक छोटी-सी घटना में सम्पूर्ण जीवन की सार्थकता का अनुभव यदि कहानीकार पाठक को करा देता है, तो यह उसकी विशेष उपलब्धि ही है। कहानीकार का जीवन संबंधी दृष्टिकोण उसके समस्त परिवेश से प्रभावित रहता है।''[1]

कथाकार अपनी कथा के माध्यम से उसके आसपास घटित हो रही घटनाओं का बड़ा ही सावधानी पूर्वक वर्णन कर अपनी बात को पाठकों के मध्य रखता है। कहानी वास्तविक जीवन की एक ऐसी काल्पनिक कथा है जो छोटी होती हुई भी महत्वपूर्ण और प्रभावशाली होती है। ''कहानी साहित्य का एक विकसित एवं कलात्मक रूप है, जिसमें लेखक अपनी कल्पना शक्ति के सहारे कम से कम पात्रों अथवा चरित्रों के द्वारा कम से कम घटनाओं और प्रसंगों की सहायता से मनोवांछित कथानक, चरित्र, वातावरण, दृश्य अथवा प्रभाव की सृष्टि करता है।''[2]

यह कहना कठिन है कि कहानी छोटा उपन्यास है, या उपन्यास छोटी कहानी। पर इतना अवश्य है कि कहानी उपन्यास के उपेक्षा सरल ओर संक्षिप्त होती है। ''हिन्दी के प्रमुख कथाकार प्रेमचंद ने लिखा है कि साहित्य में कहानी का स्थान इसलिए ऊँचा है कि वह एक क्षण में बिना किसी घूमाव-फिराव के किसी न किसी भाव को प्रकट कर देती है। चाहे थोड़ी मात्रा में क्यों न हो, हमारा परिचय का दूसरों में अपने को देखने का, दूसरे के हर्ष या शोक को अपना बना लेने का क्षेत्र बढ़ा देती है।''[3]

साहित्य की विभिन्न विद्याओं में कहानी एक ऐसी विद्या है जो बहुत कम समय में बहुत सीमित होते हुए भी कहानी में वर्णित पाठक, पात्र के सुख-दुख को अपना सुख-दुख समझने पर बाध्य कर दती है। कहानी के माध्यम से लेखक अपनी अंर्तात्मा की बात सीधे समुदाय के सम्मुख रखता है। कहानी का ताना-बाना विभिन्न रूपों में गढ़ कर पाठक का ध्यान अपनी मूल बात पर खींच ही देता है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सिद्ध किया है- 'इन्दूमती' हिन्दी पहली कहानी है। शुक्ल जी ने लिखा है अंग्रेजी की मासिक पत्र-पत्रिकाओं में जैसे छोटी-छोटी आख्यायिकाएँ या कहानियाँ निकला करती हैं वैसी कहानियों की रचना 'गल्प' के नाम से बंग-भाषा में चल पड़ी थी। द्वितीय उत्थान की सारी प्रवृतियों का आभास लेकर प्रकट होने वाली पत्रिकाओं में इस प्रकार कहानियों के दर्शन होने लगे। सरस्वती के प्रथम वर्ष में ही पं. किशोरी लाल गोस्वामी की 'इन्दूमती' नामक कहानी छपी जो मौलिक जान पड़ती है।''[4] यही नहीं अपनी स्थापना को स्पष्ट करते हुए आचार्य शुक्ल ने आगे लिखा है- ''उपयुक्त दृष्टि से हम देखे तो ईंशा अल्लाह खाँ की 'रानी केतनी की कहानी' न आधुनिक उपन्यास के अन्तर्गत आयेगी न राजा शिवप्रसाद सिंह का 'राजा भोज का सपना' या 'वीर सिंह का वृतांत' आधुनिक छोटी कहानी के अंतर्गत है।''[5]

19वीं सदी के अन्त में इंशा अल्लाह खां के द्वारा रचित कहानी में कहानी का सूत्रपात हुआ। इस कहानी की रचना लेखक ने अपनी प्रेरणा से ठेठ हिन्दी में की थी। इसलिए यह बहुत पसन्द की गई। यह हिन्दी की सर्वप्रथम मौलिक कहानी है। इस कहानी के पात्र व स्थान भारतीय है। परन्तु इसकी कथा पूर्णतः ईरानी संस्कृति और फारसी शैली में है।

बैताल पच्चीसी एवं सिंहासन बतीसी आदि कथा साहित्य भी फोर्ट विलियम कॉलेज से प्रकाशित हुई। उस समय इसके श्रोता हिन्दू और मुस्लमान दोनों थे। सूफी कवियों ने अपने प्रेमाख्यानों को लोक कहानी और प्रेम कहानी कहा है। भूत-प्रेत, मन्त्र-तंत्र, जादू-टोना और देवी देवताओं जैसी अलौकिक तत्वों में जनता को पूर्ण विश्वास था। सिद्धांतों के समय से ही जनता अज्ञान, दास्ता एवं निर्धनता में जकड़ी थी। साधारण जनता पीड़ित एवं आक्रान्त थी, इसलिए स्वाभाविक है कि कष्ट और दर्द भरे जीवन से परे श्रोता व पाठक साहित्य में काल्पनिकता चाहते थे। 1838 ई. में 'किस्सा हातिमताई' का हिन्दी अनुवाद कलकत्ता से और दूसरा अनुवाद बनारस से हुआ। कहानी का सर्वाधिक आधुनिक काल में हुआ, कहानी लेखन के शुरूआती दौर में कहानी लेखन के दो स्रोत पाये जाते हैं, एक संस्कृत की कथा, दूसरी उर्दू-फारसी की कहानियाँ संस्कृत की धार्मिक एवं पौराणिक कथाओं के अनुवाद 'साथ-साथ', 'किस्सा तोता मैना', 'शुक बहतरी', सारंग-सदावृत, सोरठी-वृजाभार आदि तो 'उर्दू-फारसी' में किस्सा हातिमताई, बागो बहार, दस्ताने हम्मीर हमजा, तिलस्मी हो भूखा जैसी कहानियाँ लिखी गई।

आचार्य चतुरसेन शास्त्री जी के द्वारा रचित 'मुगल बादशाहों की अनोखी बातें' नामक कहानी संग्रह की लगभग सभी कहानियाँ मुगलकाल से सम्बंधित है। 'शबरी की बात', 'दुखवा मैं कासे कहूँ- मोरी सजनी, 'हातिमताई', 'सब माल बादशाह सलामत का', 'स्त्रियों का ओज' आदि कहानियां आचार्य की ऐतिहासिक कहानियाँ हैं। इस प्रकार धीरे-धीरे हिन्दी कहानी का विकास होता गया। प्रेमचन्द जी के आगमन के बाद हिन्दी कहानियाँ अपनी यौवनावस्था पर पहुँच गई। कथा सम्राट, प्रेमचन्द आदर्शोन्मुख यथार्थवादी परम्परा के सस्थापक थे। इन्होंने सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, हास्य प्रधान, नैतिक आदि अनेक प्रकार के मानव-कल्याणकारी कहानियों का रचना किए। "सोजेवतन की पांच कहानियों में से चार-दुनिया का अनमोल रतन, शेख मखमूर, यही मेरा पतन है 'सांसारिक प्रेम और देश-प्रेम भावनात्मक स्तर पर राष्ट्रीय चेतना से अनुप्रमाणित है और दूसरी सारी सांसारिक चीजों की अपेक्षा देशभक्ति के जज्बे को असाधारण गौरव एवं गरिमा देने की दिशा में संतरण करनती दिखाई देती है। दुनिया का सबसे अनमोल रतन में शिशु के प्रति वत्सलता और पति के प्रति सारे समर्पण एवं निष्ठा के मुकाबले अपने देश पर कुर्बान हो जाने की भावना को ही सर्वोपरि ठहराया गया है।"[6]

'शतरंज के खिलाडी' कहानी में प्रेमचंद ने सामन्तवादी व्यवस्था का स्पष्ट रूप चित्रित किया है, यह कहानी अर्थव्यवस्था पर चोट करती है, इसमें कथानायक अपना ऐतिहासिक रूप खो चुके है, ओर एक नई राज्यशक्ति के द्वारा शतरंज के मोहरों के तरह पिट रहे हैं। राज्य में हाहाकार मचा हुआ है, राजकोष को भरा जा रहा है।

"गृहदाह और अलग्मोझा' जैसी कहानियों में संयुक्त परिवार प्रथा के प्रति उनका मोहन अलबत्ता अभी भी किसी हद तक बना रहता दिखाई देता है, लेकिन इसके साथ ही पीड़ित और वंचित वर्ग के अभिशप्त जीवन, उन पर होने वाले अत्याचार, बेगार और उनके निर्मम शोषण के बड़े यथार्थ और आत्मीय और प्रामाणिक चित्र इस दौर के कहानियों में सहज ही देखे जा सकते हैं। कठोर मेहनत के बावजूद किसान गरीब, अभिशप्त और फटेहाल है क्योंकि जमींदार, कारिन्दे, पुलिस और धर्म के ठेकेदार सब के सब जोंक की तरह चिपककर दृश्य-अदृश्य रूप में उनका खून चूस रहे हैं।"[7]

3. निष्कर्ष

प्रेमचन्द की कहानियों का संग्रह कमल किशोर गोयनका ने मानसरोवर 1-8 भाग नाम से संग्रहित किया है जिसमें लगभग 300 कहानियों को रखा गया है। जिनमें धिक्कार, पूस की रात, ईदगाह, अलग्योझा, ठाकुर का कुआं, दो बैलों की कथा, दूध का दाम, कानूनी कुमार, बड़े भाई साहब, सवासेर गेहू, पंच परमेश्वर, बड़े घर की बेटी, नमक का दारोगा, कफन, सदगति, आदि कहानियों को अग्रणीय रखा गया है। जिस काल में प्रेमचंद का जन्म हुआ था वह समय सामाजिक धार्मिक रूढ़ियों से भरा था। वेमेल विवाह, विधवा पुर्नविवाह, बाल विवाह, पर्दा प्रथा आदि के साथ-साथ, शोषण, अत्याचार, वह ग्रामीण जीवन पर अपनी लेखनी चालया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. हिन्दी कथा साहित्य में मध्यकालीन भारत, सुधा मित्तल, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पृ. 222
2. हिन्दी कथा साहित्य में मध्यकालीन भारत, सुधा मित्तल, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पृ. 222
3. हिन्दी कथा साहित्य में मध्यकालीन भारत, सुधा मित्तल, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पृ. 223
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास, रामचन्द्र शुक्ल, पृ. 479
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास, रामचन्द्र शुक्ल, पृ. 479
6. हिन्दी कहानी का विकास, मधुरेश, लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, प्रयागराज, जनवरी 2018, पृ. 21
7. हिन्दी कहानी का विकास, मधुरेश, लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, प्रयागराज, जनवरी 2018, पृ. 38,